Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शिक्षा और समाज से गहरा संबंध

Chet Narayan Sahu[1]* Dr. Ramesh Kumar[2]

[1] Research Scholar, Department of Education, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Supervisor

सार – ***शिक्षा और समाज का गहरा संबंध होता है। दोनों ही एक दूसरे पर आश्रित होते है। किसी भी समाज के उत्थान हेतु शिक्षा जैसे सक्रिय एवं सचेष्ट प्रयास की आवश्यकता होती है।***

शिक्षा स्वयं महान मनीषियों एवं विचारकों के चिन्तन रूपी पुष्प की परिणति हैं। स्पष्टतया समाज की दिशा में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विश्व की संस्कृतियों में भारत उद्भूत सस्कृति महत्वपूर्ण रही है। यहां के मनीषी और विचारक सम्पूर्ण धरा को एकसूत्र में बांधने तथा कल्याण के मार्ग पर प्रशस्त करने में चैतन्य रहे है। भारत के कुंजो से संपूर्ण वसुधा के प्राणियों के सुख और रूग्णहीन रहते हुए दूसरों के सुख-दुख में सहभागी होने की कामना की गयी हैं। पूर्व से उत्पन्न ज्ञान के इस आलोक से सम्पूर्ण पश्चिम को वैचारिक दृष्टि मिली। प्राचीनकाल, मध्य काल ब्रिटिश काल तथा उत्तर काल में भी मेघा ने ऐसे ही पताका विश्व में फहराते हुए भारतीय विचारकों और चिन्तकों को अनूठा स्थान प्रदान किया। भारतीय चिन्तन व्योम में ऐसे नक्षत्र रहे है, जो वैचारिक भूमंडल को सचेष्ट सक्रिय और जीवन्त बनाते रहे हैं। ऐसे में ही विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहस गांधी, अरविंद आदि के अतिरिक्त अनेक समाज सुधारकों के नाम स्वर्णाक्षरों के उल्लेख है।

----------X----------

परिचय

डॉ. राधाकृष्णन के धार्मिक, आध्यात्मिक तथा प्रगतिवादी विचार छात्रों के वैवारिक क्षितिज को उन्नत करने के साथ उन्हें एक स्वस्थ नागरिक बनाने की शिक्षा के प्रेरक प्रतीत होते है। इस पक्ष पर अत्यधिक अध्ययन तथा सतत शोध की आवश्यकता प्रतीत होती है। डॉ. राधाकृष्णन दार्शनिक के अलावा एक महान शिक्षाशास्त्री प्रतीत होते है। जिनके विचार बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रभावी होने के साथ इक्कीसवीं शताब्दी में और भी उपयोगी प्रतीत होते है। इक्कीसवीं शताब्दी की शिक्षा व्यवस्था विशेष रूप से वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में डॉ. राधाकृष्णन के विचारों से अधिक दिशा निर्देश प्राप्त करने हेतु अपेक्षित है, इस सदी में गनुष्य का व्यक्तित्व और भी ध्यान देने योग्य है, जबकि सूचना तंत्र के अधुनातन उपकरणों की होड़ मची हुई है। ऐसे में व्यक्ति की गरिमा और शिक्षक का स्थान गरिमामयी स्थिति में पहुंचाने की दिशा में डॉ. राधाकृष्णन के प्रयास अत्यंत उपयोगी प्रतीत होते है तथा शोधकर्ताओं के अध्ययन के विषय बनने योग्य है।

वर्तमान भारतीय सामाजिक संगठनात्मक विसंगतियों के बीच मानव हृदय को सौन्दर्य से भर देना चाहिए द्य डॉ. राधाकृष्णन के एतद् दृष्टिकोण में यदि हमारा कोई सामान्य दर्शन अथवा जीवन का दृष्टिकोण नहीं है तो हम व्याकुल रहेंगे और लालच, भीरूता उद्विग्नता तथा पलाया वाद से ग्रस्त रहेंगे।

डॉ. राधाकृष्णन द्वारा उद्भूत विभिन्न शैक्षिक पक्षों एवं अवयवों को 21 वीं शताब्दी के परिप्रेक्ष्य में देखना शोधकर्ता के विषय विस्तार एवं विश्लेषण का विषय प्रतीत होता है। डॉ. राधाकृष्णन जैसे सूक्ष्म चिन्तक एवं सुप्रतिष्ठित, शिक्षा दार्शनिक शिक्षा मनीषी को शैक्षिक व्यवस्था में अपेक्षित दृष्टि से स्थापित किये जाने का प्रयास न्यून प्रतीत होता है। इस विषय का औचित्य भी अध्ययन का विषय बनता है। अभी तक कृत एवं विस्तारित गवेषणात्मक अध्ययनों में इस विषय को अभाव के रूप में देखा गया है। संबंधित साहित्य के अध्यनोपरांत प्राप्त होता है कि देवी

www.ignited.in

कलावती (2012) ने विहंगम दृष्टिपात किया है। अपने अध्ययन को विस्तारित करते हुए सरदार रामश्श् (2017) ने डॉ. राधाकृष्णनन के विचारों की आचार्य नरेन्द्र देव के विचारों से तुलना की।

इन अध्ययनों में शैक्षिक संरचना एवं प्रमुख स्तम्भों की या तो उपेक्षा की गयी अथवा विधिवत आलोकित नहीं किया गया। अध्ययन के इसी क्रम में अस्थाना (1991) द्वारा डॉ. राधाकृष्णनन के शिक्षा दर्शन का मात्र स्नातकोत्तरीय अति साधारण अक्रमिक एवं अपूर्ण अध्ययन किया गया। इस विषय में हुए अध्ययन अत्यंत सीमित तथा जो हुए भी है, वे किसी विशेष दृष्टिकोण से पूर्ण किये गये है। समीक्षात्मक विवेचनों से स्पष्ट है कि पूर्व में सम्पादित अध्ययनों में सम्यक विस्तार, सम्यक दृष्टि एवं सम्यक प्रकाश का अभाव है। अध्ययनों की अल्पता तथा प्रमुख अधूरे क्षेत्रों पर अप्रकाशिता और विशेष रूप से वर्तमान सदी और समय में प्रस्तुत अध्ययन कार्य की आवश्यकता के रूप में उपस्थित हुई।

साहित्य की समीक्षा

डॉ. एस. राधाकृष्णन स्वामी विवेकानन्द के हिन्दू दर्शन के प्रति विचारों से बहुत ही प्रभावित थे। 1918 से 2 वर्ष तक मैसूर विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में अध्यक्ष पद पर कार्य किया तत्पश्चात किंग जार्ज चेयर आफ मेण्टल एण्ड मारल साइन्स के पद पर कार्य किए। 1931 से 1936 तक उन्होंने आन्ध्र विश्वविद्यालय के कुलपति के पद को सुशोभित किया। देश के मूर्धन्य विद्वानों को काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में देश सेवा और त्याग की भावना से एकत्र करने की भावना से ओत-प्रोत महामना मालवीय जी ने डॉ. राधकृष्णन की प्रतिभा को देखते हुए उन्हें कुलपति पद पर 10 वर्ष तक कार्य करने हेतु अवसर प्रदान किया।

डॉ. एस. राधाकृष्णन ने विचारानुसार (2016) - वर्तमान मानव, विकास के विज्ञानमय कोष में है, विज्ञान की अनेक उपलब्धियाँ अतीत के उपलब्धियों से प्रबल एवं प्रचुर है, यह भौतिकता का विकास है। वैज्ञानिक प्रक्रिया में व्यक्ति व्यक्ति व राष्ट्र-राष्ट्र में अन्तर है। आनन्दमय कोष की स्थिति इससे बहुत उच्च है। यह सम्पूर्ण मानव जाति को समान मान्यता प्रदान करता हैं मानवीय मूल्यों के विकास के लिए पदार्थ या जड़ तत्व के प्रबोधन की आवश्यकता है। यह नन्दमय चरण में ही संभव है। अतः आनन्द की उपलब्धि हेतु सम्पूर्ण साधनों को नियोजित किया जाना चाहिए। तभी हम उपनिषदीय ज्ञान से आगे बढ़कर पूर्णता की स्थिति को प्राप्त करेंगे तथा वसुधैव कुटुम्बकम्श् का भाव जागृत हो सकेगा। यही मूल जीवन दर्शन है।

हिन्दू धर्म के प्रति डॉ. एस. राधाकृष्णन का विशेष योगदान है, कुछ पाश्चात्य आलोचकों जैसे अन्डरवुड, स्वीटजर आदि ने हिन्दू धर्म को रूढ़िग्रस्त व निरर्थक बताया। अंडर वुड ने हिन्दू धर्म की अपेक्षा ईसाई धर्म को श्रेष्ठ बताया क्योंकि हिन्दू धर्म का नवीनीकरण संभव नहीं है। डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार हिन्दुओं ने जीवन के रूप में मानवता को स्वीकार किया है, पूर्व ने अपनी सम्पूर्ण निष्ठा के साथ धर्म को स्वीकार किया है। हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म को पूर्व का प्रतीक माना जा सकता है तथा ईसाई को पश्चिमी धर्म का प्रतीक माना जा सकता है।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार (2015) - धर्म का सार उन धर्म सिद्धान्तों में तथा धार्मिक मतों में, विधियों में और संस्कारों में नहीं है, जनसे हममें से अनेक को विरक्ति होती है, अपितु युगों की गम्भीरता, बुद्धिमता में, अनवरत तत्व ज्ञान में, सनातन धर्म है, जो आधुनिक विचार की किंकर्तव्य विमूढ अस्त उपस्तता में हमारा एक मात्रपथ पथप्रदर्शक हैं विभिन्न धर्म सत्य का प्रतिनिधित्व नही करते, अपितु सत्य के उन विभिन्न पक्षों और धारणाओं का प्रतिनिधत्व करते है, जिनमें कि लोग विश्वास कर रहे है, वे उस एक ही सत्य को विविध ऐतिहासिक अभिव्यक्तियों है, जो अपनी प्रमाणिकता की दृष्टि से सार्वभौमिक व सार्वकालिक है।'

डॉ. राधाकृष्णन का कहना है कि हिन्दू धर्म स्वस्थ, कर्मशील, प्राण शक्ति, से ओत प्रोत है। सदियों की पराधीनता, परिस्थतिजन्य अवसाद और कुण्ठा ने हिन्दू मानस को इतना खटास कर दिया है कि वह अपनी धर्म की शक्ति और क्षमता से अनभिज्ञ हो गया हैं वह उससे प्रेरणा ग्रहण नहीं कर पा रहा है। हिन्दू धर्म का मूल तत्व सशक्त हैं वह वर्तमान के साथ चरण बढ़ाकर चल सकता हैं वह प्रत्येक कठिनाई में सहायक हो सकता हैं। नवीन विकास में सक्रिय योग दे सकता है। हिन्दू धर्म को दुर्बल मानने वाले राधाकृष्णन के इस कथन से क्षुब्ध है। यह सिद्ध करने का प्रयास करते है कि जो भी अच्छाइयां राधाकृष्णन हिन्दू धर्म में देखते है वे हिन्दू धर्म में नही बल्कि ईसाई धर्म में है।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार(2014)-मनुष्य सारतः चेतना है। चेतना द्रष्टा है दृश्य नहीं है वह मनोवैज्ञानिक अन्वेषण और विश्लेषण का विषय न होगा अनुभव का विषय है। मानव आत्मा की अभिलाषा है- प्रेम इच्छा आत्मा के वास के सूचक हैं। विश्व के सभी विचारकों में मतैक्य है कि इस आत्मा को जानना मनुष्य का धर्म है।

www.ignited.in

अध्ययन का उद्देश्य

1. वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन के प्रभाव का मूल्गंकन।
2. एक शिक्षा शास्त्री के रूप में डॉ. राधाकृष्णन के विचारों का मूल्यांकन।

निष्कर्ष

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षा की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त सतत् रूप से चलती रहती है। अधिगम की प्रक्रिया द्वारा शिक्षा उसके व्यक्तित्व के विकास में सहायक है। शिक्षा द्वारा बालक के शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा के सभी पक्षों का विकास करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा ही मानव तथा समाज दोनों की प्रगति का आधार रही है। यह व्यक्ति तथा समाज दोनों में मूल्यों, कौशलों के विकास के साथ-साथ उसकी क्षमताओं का अधिकाधिक अभिवर्द्धन करती है। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन माना जा सकता है। परिवर्तन एक निश्चित एवं क्रमिक प्रक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती परन्तु समाज में संक्रमण की स्थिति में शिक्षा एक प्रभावशाली साधन के रूप में कार्य करती है। यह व्यक्ति को समाज में सक्रिय योगदान देने हेतु प्रशिक्षित करती है तथा साथ ही मानव संसाधन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। किसी भी समाज में शिक्षा उसकी प्रतिबिम्ब होती है। शिक्षित समाज ही मानवता के कल्याण का साधक एवं प्रगति का सूचक बनता है। शिक्षा ही संस्कृति का वाहक, पोषक तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरण का साधन है। शिक्षा पर समकालीन परिस्थितियों, घटनाओं तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व के व्यक्तियों के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

निष्कर्षतः शिक्षा के तत्वों को व्यवस्था में उतारने तथा व्यक्ति एवं समाज को गतिशील, सामंजस्य पूर्ण तथा समग्र ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में आत्म ज्ञान युक्त बनाने की दिशा में वैचारिक अभिव्यक्ति की गई। यह सभी सम्प्रति अति महत्वपूर्ण है तथा नव-युवाओं को दिशा देने हेतु अत्यन्त उपयोगी प्रतीत होते हैं। जीवन के कठिन मार्गों पर आत्म विश्वास पूर्ण संचलन हेतु यह विचार सदैव सहायक सिद्ध प्रतीत होंगे

संदर्भ

1. भार्गव, वी.एस.: आधुनिक भारत, कालेज बुक डिपो, जयपुर, 1970।
2. मजूमदार, आर.सी.य राय चौधरी व दत्त, के.के.: भारत का वृहत्त इतिहास, मैकमिलन एण्डं., कलकत्ता, 19711
3. यूनेस्को, आजीवन शिक्षा, शिक्षा जगत आज और कल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1972
4. राधाकृष्णन एस.: ब्रह्मसूत, जार्ज एलिन एण्ड अनविन, दिल्ली, 1924 1
5. राधाकृष्णन एस.: कल्कि (द फ्यूचर आफ सिविलीजेशन), हिन्द किताब, बम्बई, 19491
6. राधाकृष्णन एस. (अनुवादक विश्वम्भर नाथ त्रिपाठी): भारतीय शैक्षणिक विचारधारा, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, 1955।
7. राधाकृष्णन एस. (अनुवादक विश्वम्भर नाथ त्रिपाठी): स्वतन्त्रता एवं संस्कृति, दी अपर इण्डिया पब्लि. हाउस, लखनऊ, 1955।
8. राधाकृष्णन एस. (अनुवादक कृष्ण चन्द्र), जीवन की आध्यात्मिक दृष्टि, राजकमल प्रकाशन लि., दिल्ली, 1962।
9. राधाकृष्णन एस. (अनुवादक शान्ति जोशी): राधाकृष्णन का विश्वदर्शन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 19661
10. राधाकृष्णन एस. (अनुवादक विराल एम.ए.): धर्म तुलनात्मक दृष्टि में, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 19631
11. राधाकृष्णन एस. (अनुवादक वर्मा, रमेश): पूर्व और पश्चिम - कुछ विचार, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 19681
12. राधाकृष्णन एस.: भारतीय संस्कृति कुछ विचार, हिन्द पाकेट बुक्स प्रा.लि., शाहदरा, दिल्ली, 1989
13. राधाकृष्णन एस.: प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचार, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1967
14. राधाकृष्णन एस.: सत्य की ओर, हिन्द पाकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली, 19901

www.ignited.in

15. राधाकृष्णन एस.: भगवद्गीता (परिचय), सरस्वती विहार, दिल्ली। 2

16. राधाकृष्णन एस.: धर्म और समाज, राजपाल एण्ड संस दिल्ली

Corresponding Author

Chet Narayan Sahu*

Research Scholar, Department of Education, OPJS University, Churu, Rajasthan

baindasunil123@gmail.com